देवभूमि-सौरभम्
Devabhūmisaurabham
Vol 1 Issue 1 January 2024 Devabhūmisaurabham International Journal of CSU Shri Raghunath Kirti Campus Devprayag Uttarakhand India

केदारखण्ड की प्राचीन शैव शिक्षण व्यवस्था का ऐतिहासिक विवेचन

डा. सुशील प्रसाद बडोनी

देवभूमि केदारखण्ड शिव (केदार) की भूमि है। सर जानउडरफ लिखते है- महानिर्वाण तंत्र का उत्पत्ति स्थल हिमालय में है, जो आर्य जाति की संस्कृति से गौरवान्वित है। यह शिव का क्षेत्र है। इसी क्षेत्र में पर्वतराज-तनया पार्वती ने जन्म लिया और जो गंगामाता का उद्गम स्थल है, केदारनाथ का मठ और मन्दिर सदा शिव के नाम से शैव सम्प्रदाय को समर्पित है, जो जंगम कहलाते हैं।1

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 114 वें सूक्त के ग्यारह मन्त्रों में कहा गया है "रुद्र विनाशकारी अस्त्र-शस्त्रों के ज्ञाता थे। वे वरणीय भेषज को धारण करनेे वाले थे, वे पृथ्वी और अन्तरिक्ष (कैलाश) के अधिपति एवं वीरों के विनाशकारी है।" रुद्र को उत्कृष्ट ज्ञानयुक्त, अभीष्टवर्षी, अत्यन्त महान्, स्तुति रक्षक, यज्ञपालक, औषधियुक्त, सूर्य के समान दीप्तिमान् एवं देवों में सर्वोत्कृष्ट कहा है।2

शिव योगविद्या, धनुर्वेद, आयुर्वेद, गायन, वादन, नृत्य, तन्त्र-मन्त्र एवं रसायन शास्त्र आदि विधाओं के आचार्य थे।3 शिव को दीर्घजीवी सांख्य योग के प्रवर्तक और अनेक शिल्पों का आचार्य कहा है, बहम पुराण के अनुसार सुरभि और प्रजापति कश्यप से जिन एकादश रुद्रों की उत्पत्ति हुयी थी, उनमें शिव अत्यन्त तेजस्वी थे। वे आयुर्वेद, पारदकल्प, धातु कल्प, हरितालकल्प, वैद्यराज तन्त्र, रुद्रमालयतंत्र आदि शास्त्रों के प्रणेता थे। 4

हिमालय का उत्तरगिरि प्रदेश प्राचीन वाङ्मय में कैलाश क्षेत्र भी कहलाता है, इस क्षेत्र में शिव के आचार्यत्व एवं कुलपतित्व में एक ऐसा विद्या केन्द्र स्थापित था, जिसमें आर्य, अनार्य, देव, असुर साठ सहस्र स्नातक सदैव शिक्षा पाते थे।5 केदारखण्ड के आश्रमों में महाभारत के सम्पादन से पूर्व शैव सम्प्रदाय से दीक्षा देने की परम्परा

चल पड़ी थी। गंगा के तट पर उपमन्यु के आश्रम में श्रीकृष्ण ने शैव दीक्षा लेकर तप किया था।6 यही इन्द्रकील पर्वत पर अर्जुन को शिवजी के दर्शन प्राप्त हुए थे। जैन आगमों के अनुसार महावीर के जीवन काल में स्कन्द और मुचुकुन्द की भाँति ही शिव की पूजा प्रचलित थी।7

शैवाचार्यों ने मूल रूप में ईश्वरत्व को पारमात्मा शिव ही माना है। शिव के शिवत्व में बुद्धि तत्व की प्रधानता रहती है किन्तु ईश्वर तत्व में प्राण तत्व प्रमुख माना गया है। 8 ऋग्वेदिक देवताओं में रुद्र का महत्वपूर्ण स्थान है। रुद्र आयुर्वेद के आचार्य थे। मनु को उन्होने कई रोगों एवं भयों से मुक्त किया था। देवगण उनसे स्वास्थ्य लाभ की कामना करते है(ऋ० 1-114-1)। वे अनेक औषधियों के ज्ञाता थे। वे शास्त्र विद्या में भी पारंगत थे। कैलाश क्षेत्र में उनका आश्रम सुर तथा असुर स्नातकों से परिपूर्ण अनेक विद्याओं का प्रमुख केन्द्र था। 9

शिव उपासना सिन्धु घाटी सभ्यता के युग में भी प्रचलित थी। उस समय शिव का पशुपति रुप प्रचलित था। वैदिक काल में शिव की प्रसिद्धि रुद्र रुप को ग्रहण किया जाने लगा था। केदार क्षेत्र शिव-शक्ति से विशेष रुप से सम्बन्धित रहा है। कैलाश पर्वत पर शिव के शासन की कल्पना की गयी है। 10 कैलाश क्षेत्र में इनका आश्रम अनेक विद्याओं का शिक्षा केन्द्र था ।11

हिमालय का उत्तर गिरि प्रदेश प्राचीन वाङ्मय में कैलाश क्षेत्र भी कहलाता स है।इप्रथमशिव आश्रम में "प्रथमः शिवसुतारः" के पश्चात् क्रमशः अट्ठाईस शिवों को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया था। अपने आश्रम में शिव ने सर्वप्रथम अपने चार शिष्यों-श्वेत, श्वेत शिख, श्वेताश्व और श्वेतलोहित को ज्ञानापदेश दिया था। आर्यों की देव और असुरोपासक दोनों शाखाओं ने शिव का आचार्यत्व स्वीकारा था। रावण और वाणासुर शिव द्वारा दीक्षित स्नातक थे।12 नारद ने रुद्रप्रयाग में शिव के चरणों में बैठकर शिव से संगीत विद्या का ज्ञान प्राप्त किया था। शिव कुछ अवैदिक आदर्शों के समर्थक होते हुए भी ये वहु विद्याविद् थे। रामायण में राम-लक्ष्मण के विरुद्ध युद्ध में रावण और मेघनाद का बार-बार हिमवन्त में शस्त्र-शास्त्रों के आचार्य शंकर से युद्ध- कला के सम्बन्ध में निर्देश प्राप्त करने के लिए आने का वर्णन है।13

शिव अद्‌वितीय कलाकार थे। वे गायन, वादन, नृत्य के आदि गुरु हैं। इन ललित कलाओं में रसों और रसराज की अत्यधिक अभिव्यक्ति आर्यों के विरुद्‌ध होते हुए भी अनिवार्य है। केदार क्षेत्र में शिवलिग्डके उपासक शैवों और शाक्तों का इस पूजन पद्‌धति में बाहुल्य रहा है। शैवाचार्यों ने मूल रुप में ईश्वरत्व को परमात्मा शिव ही माना है। शिव की कल्पना उनके द्‌वारा महाकाल के रुप में होने से उनके संहारक रुप रूद्र को महत्व प्राप्त हुआ। शिव के शिवत्व में बुद्‌धि तत्व की प्रधानता रहती है किन्तु ईश्वर तत्व में प्राण तत्व प्रमुख माना गया है।14 यही प्राण शक्ति विश्वात्मा रुप से कही गयी है जिसकी व्याप्ति विश्व से बहिर्मुख होती है। प्राण की गतिशील रहने वाली शाक्तियाँ शिव की वामा, ज्येष्ठा, रौद्री शक्तियाँ है। इस प्रकार समस्त जड़ जंगम सृष्टि के आधार तत्व को हमारे पूर्वजों ने महादेव के रुप में स्वीकार किया है।15शिव में ज्ञान वैराग्य, ऐश्वर्य, तप, सत्य, क्षमा, तथा आत्मसंबोध आदि गुण विद्‌यमान थे। उन्होने ऐश्वर्य से देवों को, बल से असुरों को, ज्ञान से ऋषियों को तथा योग से प्रणियों को पराजित किया था।16

वैदिक युग से ही शैव शिक्षा के व्यापक रुप को ग्रहण किया जाने लगा था, रामायण में राम और शिव की एकता स्थापित की गयी थी। महाभारत में शिव के नामों में काफी वृद्‌धि हुयी। हिन्दू धर्म शास्त्रों के अनुसार शिव तथा शक्ति की सहचर्य रुप में होने वाली लिड्‌ग पूजा सृष्टि सृजन का प्रतीक है। शिव को लिड्‌ग तथा पार्वती को उसकी पीठिका माना गया है।17 मनुस्मृति में शिव की कल्पना अर्धनारीश्वर रुप में की गयी है। इन सन्दर्भों से ज्ञात होता है कि प्राचीन काल से ही शिव की लिडग पूजा का विधान था। यह पूजा वैदिक काल से पूर्व में भी प्रचलित ऐसी उपासना पद्‌धति रही जो सम्पूर्ण भारतीय हिन्दू समाज को व्याप्त किये है।18

शिव परम्परा का केदारखण्ड क्षेत्र पर अत्यधिक प्रभाव रहा है। इसी परम्परा में नाथ सम्प्रदाय भी आता है। यह क्षेत्र शैव नाथों की तपोभूमि भी है। इस क्षेत्र में आज भी शैव मन्दिरों में नाथ सम्प्रदाय के वंशजों का स्वामित्व है। इन सिद्‌धों द्‌वारा गढ़वाली लोकभाषा में तन्त्रों का बहुत बड़ा साहित्य लिखा गया है। इनका प्रयोग यन्त्र-तन्त्र विशारद् सिद्‌धों द्‌वारा किया जाता है। नाथ शैवों का आधार शिव शक्ति में अभेद प्रतीति है इनके मत में वाहय आडम्बर को महत्व नहीं दिया गया है। प्रतीक रूप में कुण्डल, मुद्रा श्रृंगंी आदि का अवश्य धारण किया जाता है।19

नाथ सम्प्रदाय के अनुयायी लोग अपने प्रमुख आचार्यों का सम्बन्ध शिव से जोड़तें हैं स्थानीय विश्वासों के आधार पर गोरख नाथ को शिव की जटाओं से उत्पन्न माना गया है तथा उसकी पूजा शिव के अवतार रूप में की गयी है।20 शैव साधक शिर पर जटायें रखते हैं, तथा कानों पर कुण्डली मुद्रा को महत्व देते हैं। भष्म का नाथ पूजोपचारों में विशेष महत्व 'नाथबुध' ग्रन्थ में इसका सम्बन्ध शिव और पार्वती से हैं शिव के प्रसाद रूप मे भष्म को विविध समयों में देवताओं के अर्पित करने का विधान है।21

श्रीनगर (गढ़वाल) का भक्त्याणा मुहल्ला मध्य कालीन भक्ति आन्दोलन का प्रमुख केन्द्र रहा। इस स्थान पर जगत गुरू शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, बल्लभाचार्य, गुरू गोरखनाथ, तुलसीदास आदि ने निवास किया। यहाँ पर शीतला देवी का प्राचीन मन्दिर है, मन्दिर की सीढियों के दाहिनी और बड़ी-बड़ी शिलाएं है जिनकी पूजा देवी के दूतों के रूप में की जाती है। इस मन्दिर के पूर्व में गुरू गोरखनाथ की चैकोर प्राकृतिक गुफा है। जिसमें गुरू गोरखनाथ जी की दर्शनीय मूर्ति विराजमान की गयी है।

गुरू गोरखनाथ जी का उत्तराखण्ड की धरती से पर्याप्त सम्बन्ध एवं प्रभाव रहा है। उनकी एक अन्य मूर्ति नागेश्वर (गली)(श्रीनगर गढवाल) में विद्यमान है वहाँ पर एक छोटे से कोष्ट में धूनी, त्रिशूल आदि भी रखे हैं जोकि सिद्ध कहे जाते हैं। गुरू गोरखनाथ जी गद्दी के रूप में विद्यमान है।22

केदारखण्ड और नेपाल के शैव मन्दिरों से स्पष्ट होता है कि हिमालय के ये क्षेत्र-केदारनाथ, तुंगनाथ, रूद्रनाथ, कल्पनाथ आदि स्थान अति प्राचीन काल से शैवों के गढ़ रहे हैं।23 इन्होनें नियोजित ढंग से अपने आराध्य देव की पूजन परम्परा तथा संस्कृति का यहाँ प्रचार -प्रसार किया था। मन्दाकिनी के तट पर 'गौरीकुण्ड' के दक्षिण की ओर 'गुरू गोरखनाथ' का आश्रम है।24

रूद्रामालयतंत्र(17 वां पटल, श्लोक- 119-125) में आया है कि महाविद्या ऋषिवशिष्ठ के समक्ष प्रकट हुयी और उनसे चीन देश एंव बुद्ध के यहाँ से जाने को कहा इससे प्रकट होता है कि जब रूद्रामालयतंत्र का प्रणयन हुआ था तब भारत में पीठ थे। ऐन्ट्रजालिका मायावी मन्त्र अथर्ववेद् में बहुत संख्या में पाये जाते हैं, और ऋग्वेद में कुछ रहस्य वादी प्रयुक्त हुये है- यथा - वषट्, स्वाहा इत्यादि है।25

शैव अर्चक भैरवाचार्य को शिव संहिताए स्मरण थीं उसने महाकाल मन्त्र का जप एक शमसान में एक करोड़ बार किया था। रूद्रमालय (17 वाॅ पटल श्लोक-10) में कुण्डली जागरण का उल्लेख है, कुण्डली मूल को पार करती हुयी मस्तक में पहुँचती है जहाँ सहस्त दल होते है, और जब शिव से एकाकार हो जाता है तो साधक वहाँ अमृतपान करता है। रूद्रमालाय (27/58/70) में छह चक्रों (दलों) के साथ सहस्त्र और प्रत्येक के अक्षरों का वर्णन विस्तार के साथ किया जाता है।

केदारखण्ड में प्राचीन शैव शिक्षा के अनेकानेक केन्द्र विद्यमान थे जिनमें कुछ का विवरण निम्नवत है-

1ण् केदार आश्रम- यह आश्रम शैव शिक्षा का आदि केन्द्र एवं सर्व प्रमुख शैवशिक्षा केन्द्र रहा है। स्कन्दपुराण के केदारखण्ड में इसकी प्राचीनता का प्रतिपादन स्वंय शिव में अपने मुख से किया है।26 कैलाश क्षेत्रीय यह आश्रम सुर-असुर स्नातकों से परिपूर्ण अनेक विधाओं का प्रमुख शिक्षा केन्द्र था। शिव आयुर्वेद के आचार्य थे।27 शिव पुराण में भी इस आश्रम का उल्लेख मिलता है।28 केदारनाथ की मध्यमहेश्वर, तुंगनाथ, कल्पेश्वर, गोपेश्वर, गुप्तकाशी, कमलेश्वर (श्रीनगर गढ़वाल) आदि शाखाएँ विद्यमान थीं।

2ण् रूद्राश्रम- अलकनन्दा और मन्दाकिनी के संगम पर स्थित यह एक प्राचीन आश्रम था, यह स्थान वर्तमान में गढ़वाल के पौड़ी और चमोली जनपद का सन्धि स्थल है। रूद्राश्रम में देवर्षि नारद ने एकशत वर्ष पर्यन्त निराहार रहकर महादेव जी आराधना की थी।29 वहीं पर भगवान शंकर ने नारद जी को संगीत का ज्ञान प्रदान किया था।

3ण् गणेशाश्रम- यह आश्रम वर्तमान भारत की सीमा पर आखरी गाँव माणा में विद्यमान था। यह पुराणों में प्रसिद्ध ही है कि महाभारत का लेखन कार्य गणेश जी द्धारा सम्पन्न हुआ। पौराणिक साहित्य में गणेश को अनेक विधाओं, शास्त्रों का ज्ञाता माना गया है।

4ण् कैलाश आश्रम- पौराणिक साहित्य में यह क्षेत्र शिव का स्थायी निवास एंव अत्यंत रमणिक क्षेत्र कहा गया है-

जन्मौषधि तपोमन्त्र योगसिद्धैर्निरन्तरैः।

जुष्टं किन्नर गन्धर्वैरप्सरो भिवृतः सदा।।30

गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी कैलाश की रमणीयता का वर्णन किया है-

परमरम्य गिरिवर कैलाशू:, सदा जहाँ शिव उमा निवासू।

सिद्ध तपोधन जोगिजन ,सुरकिन्नर मुनि वृन्द।

बसहिं तहाँ सुकृती सकल, सेवहि शिव सुखकन्द।।

5.नीलकण्ठ आश्रम- ऋषिकेश से 8 की0 मी0 दूर गंगा के बांये तट पर मणिकूट पर्वत के मध्य भाग में यह आश्रम स्थित था। पौराणिक साहित्य के अनुसार इस आश्रम में अनेक प्रकार के सिद्ध-साधकों का निवास रहा है:-

सर्व देव गणाकीर्णै, यक्ष गन्दर्व सेवितै।

तत्रेऽको विल्व वृक्षोऽस्ति सहस्रकर सम्मितः।।

त़त्र विल्वेश्वरो नाम महादेवो भयापहः।

महत् कष्ट समापन्नो द्विदिनात्सुखमाप्नुयात्।।31

इस आश्रम में नन्दिश्वर महाराज ने भी शैव शिक्षा , भक्ति प्राप्ति के लिए तपश्चर्या की थी।32

6. कर्णाश्रमः-केदारखण्ड क्षेत्र के अन्तर्गत पंचप्रयागों में जो तृतीय प्रयाग "कर्णप्रयाग" नाम से ख्यात क्षेत्र जो अलकनन्दा एवं पिण्डर नदी के संगम पर स्थित है। कर्ण द्वारा इस स्थान पर एक विशेष यज्ञ (धर्मसभा) का आयोजन किया गया, जिसमें ऋषि वशिष्ठ , वामदेव , सुखदेव , पैल, वैशम्पायन , नारद ,तुम्वरू ,भृगु , अश्वत्थामा ,सुदैव , कश्यप ,गालव उद्दालक , पर्णासन, महानाद , शुनःशेष ,भरद्वाज , गौतम,

गणरात्रिप तथा अन्यान्य ऋषिगण उपस्थित रहे।33यह आश्रम श्रेष्ठ शैव शिक्षा केन्द्र के रूप में स्थपित था ।

7.विश्वनाथाश्रम-वर्तमान में उत्तरकाशी जनपद का मुख्यालय उत्तरकाशी वारणावत पर्वत की उपत्यका में एक सुरम्य स्थान है। केदारखण्डपुराण में इस आश्रम क्षेत्र की विवेचना इस प्रकार हुयी है-

यदा पापश्य वाहुल्यं यवनाक्रान्त भूतलम्।

भविष्यति तदा विप्रां निवासं हिमवद् गिरौ।।

यदा काशी तदा हयेषा मत्पुरी भेद वर्जिता ।

य कश्चिद्भेदकृल्लोके सयाति नरकं ध्रुवं।। 34

विश्वनाथ आश्रम में विद्यमान मरकत मणियुक्त लिङ्ग शैव भक्तों के लिए चिरकाल से उपास्य रहा है।

असित आश्रम- यह आश्रम यमुना के उद्गम के समीप समुद्रतल से लगभग 10 हजार फीट की ऊँचाई पर स्थित था, असित ऋषि अपने इस आश्रम से नित्य गंगा स्नान को जाते थे, ऐसा माना जाता है कि जब वे वृद्ध हो गये तो गंगा ने उनके हितार्थ एक छोटा सा झरना यमुना किनारे ऋषि आश्रम पर प्रकट कर दिया था यह झरना आज भी वहां विद्यमान है।

8.दक्षेश्वराश्रम:- महाभारत काल से गंगाद्वार को शिव/महेश्वर तीर्थ माने जाने के उल्लेख प्राप्त होते है। अनुशासनपर्व श्लोक 13 में उल्लेख है कि उत्तरदिशा में जहां भागीरथी गंगा मिलकर विभाजित होती है वहाँ भगवान महेश्वर का निष्णात् तीर्थ है। महाभारत में शिव के पांच उपासकों के नाम आये हैं- अर्जुन, अश्वत्थामन, श्रीकृष्ण, उपमन्यु, शाकल्य। इसी प्रकार शिव के पांच अवतार कहे गये हैं- सद्योजात, अघोर, तत्पुरुष, ईशान, बामदेव। इन सबका सम्बन्ध इस आश्रम से माना जाता है। वैदिक कालीन दक्ष द्वारा प्रतिष्ठित यह आश्रम तत्कालीन युग से शैवशाक्त भक्तों के लिए प्रेरणा श्रोत रहा है इस स्थल पर शिव भक्ति करने वालों को शिव कृपा प्राप्त होती है।

9.रावणाश्रमः- अलकनन्दा के वायें तट पर जहाँ मन्दाकिनी का अलकनन्दा में संगम होता है। वह स्थान 'नन्दप्रयाग' तीर्थ के नाम से ख्यात है। यह स्थान दशौलि परगने में जनपद चमोली के अन्तर्गत् 514 मी0 की ऊँचायी पर एक सुरम्य स्थान है। यहाँ पर आश्रम के लगभग सभी चिन्ह कालकवलित हो चुके है। इस आश्रम के प्रमुख साधक शिवभक्त रावण थे उन्हे भगवान शंकर से मनईप्सित वर यहीं प्राप्त हुआ था।35

सम्पूर्ण केदारक्षेत्र एवं नेपाल तक वर्तमान में भी कोयी स्थान ऐसा नहीं जहाँ शिवमन्दिर स्थापित न हो ये शैव परम्परा के सबसे बडे प्रमाण है। जो वैदिक उत्तरवैदिक एवं पौराणिक कालीन शैव शिक्षण परम्पराओं के संवाहक आज मन्दिर के स्वरूप में ही विद्यमान हैं।

''सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि''

1. उडरफ तन्त्रशास्त्र भूमिका पृ01
2. ऋग्वेद- 1/43/1.3.45
3. महाभारत शान्ति पर्व - 290/117, 142, 143
4. आर्यों का आदिनिवास मध्य हिमालय पृ0 305, भजन सिंह 'सिंह'
5. वही0